ओ३म्

'वर्तमान समाज में शूद्र संज्ञक कोई नहीं'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

वेद एवं वैदिक साहित्य में मनुष्य समाज को गुण, कर्म तथा स्वभाव के अनुसार चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में वर्गीकृत किया गया था। गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित इस

वैदिक वर्ण व्यवस्था में चारों वर्णों के लिए गुणों व कर्तव्यों का निर्धारण किया गया था। आज इस वर्ण व्यवस्था का स्थान जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था ने ले लिया है जो कि वर्णव्यवस्था की पूरक न होकर विरोधी व्यवस्था है। वर्तमान में अधिंकाश लोग प्रायः शर्माजी, वर्म्माजी, गुप्तजी और दासजी आदि अनेकानेक जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करते हैं जिनका गुण, कर्मों व स्वभाव से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। **इस आधार पर आज जो सामाजिक स्थिति है उसमें न कोई ब्राह्मण है, न कोई क्षत्रिय, न कोई वैश्य और न कोई शूद्र है।** प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों रामायण एवं महाभारत में इन जाति सूचक शब्दों का कहीं उल्लेख नहीं है जिसका अर्थ है कि उस काल में जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का आरम्भ नहीं हुआ था। वर्तमान समय में हम जिन्हें ब्राह्मण वर्ण का व्यक्ति कहते हैं उनमें अधिकांश अशिक्षित भी है वह प्राचीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण नहीं कहे जा सकते। अनेक ऐसे लोग है जो ब्राह्मण कुलों या जातियों में उत्पन्न हुए हैं परन्तु वह कार्य सेना या पुलिस में, व्यापार व वाणिज्य के या सरकारी सेवा में चपरासी, क्लर्क व अधिकारी का कर रहे हैं। इन लोगों में अपवाद स्वरूप शायद ही किसी ने वेदों के दर्शन किये हों, उन्हें पढ़ना व समझना तो दूर की बात है। इनमें प्रायः सभी मूर्ति पूजा आदि पौराणिक कृत्यों के अनुसार पूजा आदि करते हैं जो कि वेदविरूद्ध कृत्य है। इसी प्रकार स्वयं को ब्राह्मण कहने व मानने वाले लोग वेद विरूद्ध अवतारवाद, फलित ज्योतिष, छुआछूत, गुण–कर्म–स्वभाव की उपेक्षा करके अपने बच्चों के विवाह अपनी ही जाति में करते हैं। क्या यह गुण, कर्म व स्वभाव व व्यवसाय पर आधारित प्राचीन वा वेदकालीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण कहलायें जा सकते हैं? हमारा अध्ययन कहता है कि कदापि नहीं। इसी प्रकार से अन्य तीन वर्णों क्षत्रिय, वैश्य व शूद्रों की भी स्थिति है। **यदि निष्कर्ष रूप में देखें तो आज प्राचीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार कोई भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र की अर्हता से अलंकृत न होने के कारण इन वर्णों का प्रतिनिधित्व नहीं करता। इसलिए सर्वत्र वर्णसंकर होने से सभी मनुष्य हैं, आर्य हैं, वैदिक धर्म एवं पौराणिक मत का मिश्रण हैं, यह स्वीकार करना पड़ता है। इस निष्कर्ष के अनुसार यह भी सुनिश्चित है कि देश व समाज में वेदों की भावना व मान्यता के अनुसार शूद्र कोई भी नहीं है या फिर सभी वर्णों में शूद्र हैं और शूद्रों में अनेक व बड़ी संख्या में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य हैं।**

महात्मा गांधी जी ने अपने समय में स्वच्छता पर बल दिया था। उन्होंने स्वयं मल–मूत्र साफ कर दूसरों को एक उदाहरण प्रस्तुत किया था कि वह भी ऐसा करें जिससे समाज व देश स्वच्छ रह सकें। आज भी हमारे बड़े–बड़े राजनेता जिसमें प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी हैं, स्वयं को जनता का प्रधान सेवक कहते हैं और हाथ में झाड़ू उठाकर सफाई करते हुए दिखते व दिखाते हैं। उनका अनुकरण कर स्वामी बाबा रामदेव, श्री बालकृष्ण, अनिल अम्बानी, सानिया मिर्जा, शशि थरूर, आदि भी सफाई कर रहे हैं। मध्य काल में यदि कोई ऐसा करता तो उसे शूद्र व अस्पर्शय कहा जाता। अतः मध्यकाल की परिभाषा के अनुसार तो यह शूद्र हैं परन्तु ऐसा मानना अज्ञान व अन्धविश्वास है, और कुछ नहीं। यह सभी लोग समाज के प्रतिष्ठित लोग हैं और जो हैं, वस्तुतः वही हैं और वही रहेंगे। **इसी कारण से हमारा मानना है कि आज मध्यकालीन विचारों के अनुसार कोई मनुष्य शूद्र नहीं है।** इस बात को आज कल के ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य कहे

जाने वाले लोगों को मनसा, वाचा व कर्मणा समझना है। नगरों में रहने वाले तो इसे कुछ समझ सकते हैं परन्तु हमारे गांवों में इतनी अज्ञानता फैली हुई है कि वहां यह सन्देश पहुंचता ही नहीं और यदि पहुंचता भी है तो वह इसे समझने के लिए तैयार नहीं होते। यह हकीकत है कि प्राचीन काल में जो शूद्र होते थे, उनका समाज में पूरा सम्मान था। उनका कार्य मल मूत्र साफ करना नहीं अपितु विद्वान, ऋषियों व ब्राह्मणों के घरों में भोजन आदि बनाना व अन्य सेवा कार्य होते थे। आज यह कार्य सभी जातियों के लोग करते हैं। समय ने करवट ली और महाभारत काल के बाद मध्यकाल आया, ज्ञान विज्ञान समाप्त हो गया, अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियों व फलित ज्योतिष जैसी समाज के लिए हानिकारक व मिथ्या बातों ने समाज में स्थान पाया और एक वर्ग को शूद्र कहकर उससे छुआछुत का अमानवीय व्यवहार किया जाने लगा। आज हमारे सफाई का काम करने वाले भाईयों के कार्यों की महिमा का गान हो रहा है, जो कि समयानूकुल और उचित ही है। जब हम विदेशों में जाते हैं तो वहां स्वच्छता को देखकर उनकी प्रशंसा करते हैं। वहां स्वच्छता करने वाले लोगों के प्रति वह दृष्टि नहीं है जो हमारे देश में रही है और अब भी कुछ कम या अधिक जारी है। अब आधुनिक काल चल रहा है, अतः हमें अपनी दृष्टि बदलनी चाहिये जो यह हो सकती है कि संसार के सभी लोग समान हैं, कोई न छोटा है, न बड़ा है, सभी ईश्वर के अमृत पुत्र व पुत्रियां हैं और इस कारण से सभी हमारे परिवार के सदस्य हैं। इस दृष्टि से जीवन जीकर समाज में एक क्रान्ति लाई जा सकती है जिसकी की आज आवश्यकता है और जो स्वामी दयानन्द जी व महात्मा गांधी जी सभी महापुरूषों का स्वप्न रहा है।

महर्षि दयानन्द से पूर्व समाज में बहुविध समाजिक बुराईयां थी। सती प्रथा, स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार न होना, सामाजिक विषमता, ऊंच–नीच की भावना, निर्धन व निम्न जातियों के लोगों को कुंओं से पानी भरने की मनाही, उनसे पक्षपातपूर्ण व्यवहार, निर्बलों पर न्याय व अत्याचार, एक ही जाति में विवाह जो स्वास्थ्य, शारीरिक बल व लम्बी आयु में बाधक होता है, अन्तर्जातीय विवाह अप्रचलित थे, चूहे–चौके का अधिक महत्व था, लोग दूसरे के हाथ का पकाया गया भोजन तक नहीं करते थे, शूद्रों के मन्दिरों में प्रवेश की समस्या आदि न जाने कितनी समस्यायें थी। महर्षि दयानन्द द्वारा सन् 1875 में आर्य समाज की स्थापना करने से इन सभी अज्ञानपूर्ण अन्धविश्वासों व सामाजिक विषमताओं वाली परम्पराओं पर कुठाराघात किया गया और वेदों से सिद्ध किया गया कि ईश्वरीय ज्ञान वेदों में इनका कोई आधार नहीं है। इसके साथ ही वेदों के अनुसार सभी मनुष्य समान हैं, सभी आर्य हैं, प्राचीन काल में शूद्र वह होता था जो ब्राह्मणों के घरों में भोजन बनाने के साथ श्रम व यांत्रिकी के कार्य करता था। छुआछूत करना वेदों की आज्ञा के विरूद्ध है। सभी को यज्ञोपवीत धारण, सन्ध्योपासना व यज्ञ करने का अधिकार है। गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार विवाह करने का अधिकार है, वेदाध्ययन का अधिकार है, आदि आदि। बहुत से अन्त्यज परिवारों के भाई गुरूकुलों में पढ़कर पण्डित बने, बहुतों ने सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ को पढ़कर अपने जीवन का उद्धार व उन्नति की। स्वामी अदभुतानन्द सरस्वती व अन्य इसके प्रमाण है। **स्वामी दयानन्द सरस्वती ही वस्तुत सामाजिक क्रान्ति के जनक हैं। सामाजिक असमानता को दूर करने का सर्वाधिक श्रेय महर्षि दयानन्द जी व उनके अनुयायियों को ही है।** इस पृष्ठभूमि में हम यह कहना चाहते हैं कि आज समाज में शूद्र कोई नहीं है। जिनके विचार शूद्र व अनुचित हैं और जो मन में निम्न व नीच विचार रखते हैं, वही वस्तुत शूद्र संज्ञा के अधिकारी हैं, वह चाहे किसी भी रूतबे के कोई भी क्यों न हों। **मनुष्य की पहचान उसके जन्म से नहीं उसके कर्मों व आचार विचारों से होती है।** सद्कर्मों को करके मनुष्य श्रेष्ठ या आर्य बनता है और बुरे कर्मों को करके अनार्य व दुर्जन। इसी के साथ हम इस लेख को विराम देते हैं।

–मनमोहन कुमार आर्य
पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121

ओ३म्

निमंत्रण एवं प्रैस समाचार

वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार का जन्मशती महोत्सव रविवार दिनांक 2 नवम्बर, 2014 को हरिद्वार में आयोजित

हरिद्वार 24 अक्तूबर, 2014, ***वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान, सामवेद भाष्यकार एवं अनेक वैदिक ग्रन्थों के प्रणेता वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी का जन्मशती महोत्सव 2 नवम्बर, 2014 को हरिद्वार में आयोजित किया गया है। कार्यक्रम मघ्यान्ह 2.30 बजे हरिद्वार के देवपुरा स्थित भारत सेवाश्रम संघ के सभागार में सम्पन्न होगा।*** *वेदप्रेमी आर्य बन्धुओं से निवेदन किया गया है कि वह आयोजन में पधार कर आचार्य प्रवर डा. रामनाथ वेदालंकार जी को अपने श्रद्धा–सुमन अर्पित करें। इस अवसर पर आचार्य प्रवर की स्मृति में* ***"श्रुति मंथन"*** *नामक स्मृति ग्रन्थ का लोकार्पण किया जायेगा। इस ग्रन्थ का सम्पादन, सम्पादन कला मर्मज्ञ डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार द्वारा किया गया है। इससे पूर्व आपने स्वामी श्रद्धानन्द और स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती जी के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विद्वद–प्रशंसनीय ग्रन्थों सहित अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है।*

आमन्त्रण-पत्र

इस अवसर पर आर्य जगत के विख्यात संन्यासी और लगभग 8 गुरूकुलों के संस्थापक व संचालक ***यशस्वी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती****, गुरूकुल गौतम नगर, दिल्ली,* ***डा. सुनील कुमार जोशी****, शल्य चिकित्सक एवं मर्म चिकित्सा विशेषज्ञ, हरिद्वार तथा* ***डा. अमिता आर्या****, श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा, ज्योतिबा फुलेनगर को अलंकृत वा सम्मानित किया जायेगा। आचार्यजी के परिजन, शिष्य परम्परा एवं विद्वन्मण्डली की ओर से सभी वेदप्रेमी सभी बन्धुओं को गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के यशस्वी स्नातक, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान, सामवेद भाष्यकार, वेदमूर्ति आचार्य रामनाथ वेदालंकार के जन्मशती महोत्सव में सपरिवार इष्ट–मित्रों सहित सादर सप्रेम आमंत्रित किया गया है। निवेदन किया गया है माननीय अतिथिगण पधारकर आचार्य प्रवर के प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें।*

जन्मशती महोत्सव में आपको जिन विभूतियों के जीवन कल्याणकारी उपदेशों व उद्गारों का श्रवण करने का अवसर मिलेगा उनमें कुछ प्रमुख विद्वान हैं – ***परमपूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी सत्यमित्रानन्द जी महाराज,*** *निवर्तमान शंकराचार्य,* ***प्रोफेसर सुभाष विद्यालंकार****, पूर्व कुलपति, गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार,* ***आचार्य बालकृष्ण जी, कुलपति,*** *पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार सहित* ***डा. सुरेन्द्र कुमार, प्रो. वेद प्रकाश शास्त्री, डा. विष्णुदत्त राकेश, डा. आनन्द आर्य तथा श्री मनोज गर्ग, मेयर, हरिद्वार*** *आदि।*

सभी वेदप्रेमी आर्यजनों से आग्रह व निवेदन है कि वह महोत्सव में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायें और आचार्य प्रवर को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करें।

निवेदकः

स्वामी यतीश्वरानन्द	**डा. महावीर अग्रवाल**	**डा. विनोद चन्द्र विद्यालंकार**
विधायक, उत्तराखण्ड	कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय	(सम्पादक, 'श्रुति मंथन'')